# “स्वातंत्र्योत्तर हिंदी संस्मरण साहित्य का संवेदना एवम् शिल्प”

## विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

### ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा
### की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

### शोध-प्रारूप
### संकाय-मानविकी
### विषय-हिन्दी


**शोध निर्देशिका**

**डॉ० हनी दर्शन**
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
रामकृष्ण कॉलेज मधुबनी

**अनुसंधायिका**

**स्नेहा कुमारी**
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा
पैट क्रमांक- E2209090

**प्रस्तावित शोध का शीर्षक:-**

**"स्वातंत्र्योत्तर हिंदी संस्मरण साहित्य का संवेदना एवम् शिल्प'**

**(1950 से 1980 ई० तक)**

**प्रस्तावित शोध प्रारूप की भूमिका:-**

20वीं शताब्दी कालखण्ड में कथा साहित्य का ही केवल विकास नहीं हुआ, बल्कि कथेतर गद्य के विविध रूप भी सामने आये। आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, डायरी साहित्य, साक्षात्कार, रिपोतार्ज, निबंध, नाटक इत्यादि। इन सभी कथेतर विधाओं में संस्मरण सर्वाधिक मर्मस्पर्शी एवम् जीवन्त विद्या के रूप में विकसित हुआ है। जीवन के खट्टे-मीठे स्मृतियों और अनुभवों को मस्तिष्क में संजोकर रखता है। कालक्रम से स्मृतियाँ अत्यधिक संवेदनशील हो जाती है, फलतः साहित्यकार अपने सर्जन की तुलिका से साहित्यिक धरातल पर अवतरित करता है। संस्मरण का मूल अर्थ है, 'सम्यक् स्मृति', एक ऐसी स्मृति जो वर्तमान को अधिक सार्थक, समृद्ध और संवेदनशील बनाती है। संस्मरण मूलतः अतीत एवं वर्तमान के बीच का सेतु है। संस्मरण में लेखक उन रेखाओं में भावना का रंग उड़ेल कर उसे सजीव बना देता है भावुक कलाकार जब अतीत की अनंत स्मृतियों में से कुछ स्मरणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अनुरंजित करके तथा अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं में विशिष्ट रूप देकर रोचक संकेत शैली में व्यक्त करता है उसे संस्मरण कहते हैं। संस्मरण के मूल तत्व हैं- स्मृति, संबंधभाव, आत्मानुभव और स्वयं को खोजने-पहचानने की ईमानदार कोशिश। स्मृति का एक सिरा वर्तमान से बंधा होता है, और दूसरा अतीत से। संस्मरण का संबंध उस अतीत से है जो अनुभव के रूप में वर्तमान में जीवित है। संस्मरण साहित्य अपने अन्दर प्रतिभा एवं यथार्थता को भी पर्याय स्थात देता है। डॉ. ओमप्रकाश शास्त्री के शब्दों में संस्मरण- "अतीत की अनन्त घटनाओं में जब कलाकार किसी अधिक स्मरणीय तथा अविस्मरणीय घटना को अपने व्यक्तित्व में रंगकर रोचक शैली में यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है, उसे संस्मरण कहते हैं।" संस्मरणकार के

लिए सहानुभूतिपूर्ण हृदय, प्रभाव निर्माण की क्षमता, स्पष्टवादिता चरित्र-चित्रण की विश्लेषणात्मकता, कलात्मक, अभिव्यक्ति के साथ-साथ ईमानदारी, निष्पक्षता एवं यथार्थ चित्रण का होना अत्यंत आवश्यक है। भारतेंदु युग में ही संस्मरण लेखन का बीजारोपन हो चुका था। बालमुकुंद गुप्त द्वारा प्रतापनारायण मिश्र (1907 ई०) पर रोचक संस्मरण लिखा था। द्विवेदी युग के संस्मरण साहित्य में लेखन में श्रीवृद्धि हुई। महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रमुख संस्मरण 'अनुमोदन का अन्त (1905 ई०)', 'अतीत की स्मृति (1905 ई०)', 'सभा की सभ्यता (1907 ई०)' आदि हैं। इस युग में 'सरस्वती पत्रिका' का बड़ा योगदान रहा है। पद्म सिंह शर्मा द्वारा रचित 'पद्मपराग' हिंदी का प्रथम संस्मरण माना जाता है। इनके संस्मरण में 'संवेदनात्मक अनुभूति की प्रधानता दृष्टिगत हुई, पद्म सिंह शर्मा से प्रभावित होकर श्रीराम शर्मा ने संस्मरण लिखना आरंभ किया। शिकार (1936 ई०), प्राणों का सौदा, जंगल के जीव (1949 ई०) महत्वपूर्ण संस्मरण है। स्वातंत्र्योत्तर काल में संस्मरण साहित्य का अभुतपूर्व लेखन हुआ है। स्वतंत्रता के बाद देश का बदलता परिवेश विशेषतः राजनीति प्रशासन, संस्कृति, समाज, धर्म, भ्रष्टाचार आदि को संस्मरणकार ने अपनी लेखनी द्वारा उद्घाटित किया है। स्वांतत्र्योत्तर संस्मरणकार ने संस्मरण विधा के सारे प्रतिमान तत्व-व्यक्तित्व, स्मृति, अभिव्यक्ति चारित्रिक गुण, सत्य घटना चित्रण कर संस्मरण विधा को प्रतिष्ठित किया है। स्वातंत्र्योत्तर लेखक में बनारसी दास चतुर्वेदी के कृति 'हमारे आराध्य'(1952 ई०), 'संस्मरण' (1953 ई०), महादेवी वर्मा के संस्मरण 'पथ के साथी' (1956 ई०) और 'मेरा परिवार' (1972 ई०), रामवृक्ष बेनीपुरी जी का 'माटी की मूरतें' (1946 ई०), 'जंजीरे और दीवारे', जैनेंद्र का संस्मरण 'ये और वे'। कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'- 'जिन्दगी मुस्काई' (1953 ई०), उपेन्द्रनाथ 'अश्क' 'मन्टो मेरा दुश्मन' (1956 ई०), 'ज्यादा अपनी कम परायी' (1959 ई०), राहुल सांकृत्यायन का संस्मरण 'बचपन की स्मृतियाँ' (1955 ई०), 'जिनका मैं कृतज्ञ हूँ' (1954), शिवपूजन सहाय का 'वे दिन वे लोग' (1965 ई०) और शांतिप्रिय द्विवेदी की 'स्मृतियाँ और कृतियाँ' (1966 ई०) और विष्णुप्रभाकर का 'कुछ शब्द: कुछ रेखाएँ' (1965 ई०), रामधारी सिंह दिनकर का संस्मरण 'लोक देव नेहरू' (1965 ई०) और स्मरण और श्रद्धांजलियाँ (1969 ई०), कमलेश्वर का 'मेरे

हमदम मेरे दोस्त' (1975 ई०), अनीता राकेश 'चंद सतरे और' (1975 ई०) आदि लेखकों ने संस्मरण विद्या में योगदान दिया है। हिंदी साहित्य के संस्मरण विधा के विकास में चार चाँद लगाने में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का काफी बड़ा योगदान है। विशेषतः, 'सुधा', विशाल भारत, 'सरस्वती', माधुरी, नवभारत टाइम्स, हंस आदि है। इस तरह संस्मरण साहित्य की संवेदनात्मक विधा है और ऐसे संस्मरणों के धरातल का शोधपरक विश्लेषात्मक साहित्य को समृद्ध एवं जीवन्त कर सकता हैं।

**प्रस्तावित शोध की आवश्यकता:-**

→ प्रस्तावित शोध 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी संस्मरण का संवेदना एवम् शिल्प' की आवश्यकता स्वयंसिद्ध है। संस्मरण लेखक भोगे हुए यथार्थ को पुनजीर्वित करना चाहता है। लेखक की यह इच्छा होती है कि जिन सुख-दुःख के क्षणों को उसने अपने भीतर संजोए रखा है वे क्षण पुनः जीवित होकर अन्य लोगों तक भी पहुंचे। अपने स्मृतियों को अपनी कटु-मधुर अनुभूतियों को जीवन के सत्य को वह उद्घाटित करना चाहता है। जीवन के इस अनुकूल सत्य को संस्मरण लेखक के समक्ष रखता है। स्वातंत्र्योतर काल में संस्मरण विधा का उत्कर्ष काल रहा है। इस काल के परिवेश में सस्मरण साहित्य जो समाज का दर्पण रहा, वह चुप्पी साध कैसे बैठ सकता है? अतः विपुल संस्मरणकार जो समाज के फोटोग्राफर रहे, कैमरा रहें, जिन्होंने अपने साहित्य में विविध रूप को सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धर्म के रिश्ते, प्रशासन, भ्रष्टाचार आदि को छायांकित किया है। हिंदी संस्मरण को सुदृढ़ साहित्यिक आधार प्रदान करनेवाले में पं० बनारसीदास चतुर्वेदी का नाम सर्वप्रमुख है। जिन्होंने आरम्भ से ही विविध विषयक-आदर्श संस्मरण लिखकर तथा दूसरों को भी इसके लिए प्रोत्साहित किया। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा अनेकत्र संग्रहित उनकी श्रेष्ठ संस्मरणात्मक 'संस्मरण (1952 ई०)', 'हमारे आराध्य (1952 ई०) उनकी उल्लेखनीय कृतियाँ है। इनके संस्मरणों में रोचकता और मनोरंजकता का पर्याप्त पुट है। व्यंग्य और हास्य के अनेक स्थल

जुटाकर लेखक ने अनेक स्थानों पर सरसता की दृष्टि की है। आधुनिक युग की मीरा के रूप में बहुचर्चित लेखिका महादेवी वर्मा हिंदी संस्मरण साहित्य में सर्वोच्च स्थान है। उनके गद्य को संस्मरण साहित्य में बेजोड़ माना जाता है। इनका संस्मरण संग्रह 'पथ के साथी (1956 ई०)' में 7 लेखकों की स्मृतियों को सजीव किया गया है। इनमें संकलित साहित्यकारों में- रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, शियारामशरण गुप्त' सम्मिलित है। 'मेरा परिवार' (1972 ई०), अमानवीय पात्रों की स्मृतियाँ का अवलोकन है। इसमें पशु-पक्षियों के साथ बीते हुए अपने समय की यर्थाथता का वर्णन हुआ है। अपनी 'सोना हिरनी' संस्मरण के माध्यम से यह कथ्य प्रस्तुत किया है कि स्नेह और प्यार से पशु की सहज प्रवृति, प्रकृति और व्यवहार को अप्रत्याशित रूप से बदला जा सकता है। तो दूसरी तरफ मानव इस हिरनी की तरफ किस अभिलाषा से देखता है, सोचता है, इस पर महादेवी वर्मा ने अभिव्यक्त किया है–

"छात्रावास के सन्नटे और फ्लोरा के तथा मेरे अभाव के कारण सोता इतनी अस्थिर हो गई थी कि इधर-उधर कुछ खोजती-सी वह प्रायः कम्पाउण्ड से बाहर निकल जाती थी। इतनी बड़ी हिरनी को पालने वाले तो कम थे, परंतु उसमें खाद्य और खाद प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था। इसी आशंका से माली ने उसे मैदान में एक लम्बी रस्सी से बाँधना आरंभ कर दिया था। एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बन्धन की सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी।" इस प्रकार लेखिका ने संवेदना को दर्शाया है। रामवृक्ष बेनीपुरी की 'माटी की मूरतें (1946 ई०) तो वस्तुत सोने से भी अधिक मूल्यवान सजीव और कार्तिमान है। स्वातंत्र्योत्तर मुर्धन्य लेखकों की संवेदना को अभिव्यकत किया है। रामवृक्ष बेनीपुरी ने 'रजिया' संस्मरण में हिन्दू-मुस्लिम एकता के साथ-साथ व्यवसाय के आगे, पेट–पूजा के सामने जाति, धर्म, सम्प्रदाय कोई मायने नहीं रखता है। लेखक ने 'रजिया' का व्यक्तित्व वर्णन किये हैं।

'कानों में चांदी की बालियाँ, गले में चांदी का हैकल, हाथों में चाँदी के कंगन और पैरो में चांदी की गोडाँई-भरबाँह की बुटेदार कमीज पहने है।' श्री रामवृक्ष बेनीपुरी जी अपने 'जंजीरे और दीवारें' संस्मरण में अपने जेल जीवन के विविध मार्मिक अनुभूतिपूर्ण संस्मरण लिखें है, जिसमें अह्लाद, विभोरता, विषाद्, कटुता, सहानुभूति, करूणा, ममता आदि की विभिन्न मनःस्थितियों में अनेक घटनाओं, प्रसंगों और व्यक्तियों से सम्बन्धित संस्मरणों के सुंदर रूप उभरे हैं। रामधारी सिंह 'दिनकर' एक उच्च व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। वे कवियों के अतिरिक्त राजनेताओं और देश के मान्य विद्वानों तथा अध्यात्म साधकों के संपर्क में आये। संस्मरण और श्रद्धांजलियों में आपने पुण्य श्लोक 'जायसवालजी', श्री राहुल सांकृत्यायन, आचार्य रघुवीर, निराला, समवृक्ष बेनीपुरी, 'काका साहेब कालेलकर', लोहिया, 'राजर्षि, टण्डन' मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, किशोरीदास वाजपेयी, राजेन्द्र बाबू, राधाकृष्णन, महादेवी वर्मा, जवाहरलाल नेहरू, सुमित्रानन्दन पंत, लोकमान्य तिलक आदि है। स्वातंत्र्योत्तर काल में संस्मरण कथ्य, आकार, लक्ष्य रचनाशैली, उद्देश्य आदि में परिवर्तन हुआ है। संस्मरण के माध्यम से संगति, गुणों आदि को खुलकर सुक्ष्मता से लाया जाता है। हिंदी संस्मरण साहित्य में संवेदना और शिल्प का महत्वपूर्ण स्थान है। अलंकारिक भाषा में यदि कहा जाए तो संवेदना और शिल्प ही संस्मरण का मेरुदण्ड है। संवेदना के आधार पर ही संस्मरण कृतियों का ढाँचा रूप-रेखा बनाती है। आदर्शों से संबन्धित कार्य-व्यापार संस्मरण साहित्य में सामाहित होता है। वही संस्मरण शिल्प है। संस्मरण कथ्य बहुमुखी है, एक ओर उसमें आदमी के दुःख दर्द की अभिव्यक्ति है, तो दूसरी ओर शोषण और वर्ग-भेद के प्रति तीखा आक्रोश है। संस्मरणों में भाषिक चमत्कार के साथ-साथ संस्मरणकार की आंतरिक संवेदनाएँ भी होती हैं। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त पर लिखा 'साधना के कवि' संस्मरण जोनेंद्र कुमार की भाषा, प्रवाह का एक सवोत्कृष्ट नमुना है इस तरह 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी संस्मरण साहित्य का संवेदना एवं शिल्प' प्रस्तावित शोध विषय की आवश्यकता सार्थक है।

**प्रस्तावित शोध का महत्व**

→ प्रस्तावित कालखण्ड संस्मरण की दृष्टि से अत्यंत समद्ध रहा है। संस्मरण विधा की संवेदना के स्तर पर समसामयिक जीवन सत्यों से जुड़ी हुई है। संस्मरण को विश्वसनीय बनाने के लिए तत्कालीन परिस्थितियों समसामयिक पृष्ठभूमि और स्थानीय रंग में रंगकर ही संस्माणकार अपने लेखन में अधिक सफल होता है। स्वातंत्र्योत्तर काल में संस्मरण विद्या सर्वाधिक सशक्त के रूप में उभरी है। आधुनिक जीवन की आपाधापी के कारण आम जनता की मुश्किलों को संवेदनशील बना दिया है। स्वातंत्र्योत्तर काल के घिरे 'स्वतंत्र' आदमी को अनेक विवशताओं ने निंदा तथा तिरस्कार से घेर लिया है। इन सबका व्यापक विस्तार संस्मरण अपने फलक पर चित्रित करता है। संस्मरण के विषय-वस्तु के साथ-ही-साथ उसकी शैली आकर्षक तथा रोचक होने के कारण पाठकों से उसने आत्मीयता स्थापित कर ली है। आधुनिक भारतीय जितना वैविध्यपूर्ण है उसी प्रकार संस्मरण शैली भी वैविध्यपूर्ण है। इस नश्वर संसार में शाश्वत संस्मरण जितनी जिज्ञासा पैदा करता है, उतना ही संस्मरण की सार्थकता तथा असर बढ़ता है। स्वातंत्र्योत्तर संस्मरण-लेखन में प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रकार बनारसीदास चतुर्वेदी को भी पर्याप्त सफलता मिली है। उनके संस्मरण के चरित्र विस्तृत क्षेत्र से चुने गए है और मानवतावादी भाव–भूमि में लेखक की गंभीर निष्ठा व्यक्त करते है। "हमारे आराध्य' (1952 ई०) इसमें 17 पाश्चात्य साहित्यकारों की स्मृतियाँ है। जिनमें महाप्राण माइकेल बाकुनिन, प्रिन्स कोपाटकिन, आराजकवादी मैलटेस्टा, लुई माइकेल आदि प्रमुख है। अधिकतर संस्मरणों में स्वतंत्र पूर्व का वर्णन ही प्राप्त हुआ है, जिसमें लेखक के द्वारा उस समय किए गए अपने साहसिक संघर्षो का एवं अग्रेजों द्वारा किए क्रुरताओं का सजीव वर्णन है। 'संस्मरण' (1952 ई०) में उन्होंने अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों की कटु-मधुर स्मृतियों का प्रत्यांकन करते हुए उनके विशेषताओं को उभारा है। कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का संस्मरण 'जिन्दगी मुस्काई' (1953 ई०), उनकी शैली में सर्वत्र एक जीवतंता का अनुभव होता है। मामुली से मामुली व्यक्ति अथवा

घटना पर प्रांजल भाषा का चुस्त शैली में संस्मरण कला में निष्णात थे। शांतिप्रिय द्विवेदी की 'स्मृतियों और कृतियों (1966 ई०) में उनके कवि हृदय की अभिव्यक्ति मिलती है। लेखन ने उन परिस्थितियों का अत्यंत स्पष्ट अंकन किया है। राहुल सांकृत्यायन का संस्मरण 'बचपन की स्मृतियाँ' (1955 ई०) और जिनका मैं कृतज्ञ हूँ (1957 ई०) में बोलचाल की प्रवाहपूर्ण भाषा के द्वारा अपने हृदय की भावुकता को व्यक्त करते हुए तथा अपने संपर्क में आने वाले छोटे-बड़े तथा मामुली, महान, सभी व्यक्तियों को समान रूप से महत्व देते हुए मर्मस्पशी रचनाओं का प्रणायन इनके लेखन की विशेषता है। रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनाओं में 'लोकदेव नेहरू' (1965 ई०) तथा 'संस्मरण और श्रद्धांजलियां' (1969 ई०) उल्लेखनीय है। जिनमें सरल एवं भावपूर्ण भाषा के माध्यम से अपने युग के प्रमुख साहित्यकार राजनीतिक नेताओं आदि के निजि संबंधो का अंतरंग परिचय दिया है। हरिवंश राय 'बच्चन' की रचना 'नये पुराने झरोखे' (1962 ई०) में लेखक ने यथास्थान आधुनिक हिंदी-साहित्य पर टिप्पणियों देते हुए उसकी दुर्बलताओं और सबलताओं का सशक्त अंकन किया है। रामवृक्ष बेनीपुरी का संस्मरण 'जंजीरे और दीवारे' (1957), जिसमें लेखक स्वयं बंदी रहते हुए जिन कठिनाइयों का अनुभव करता है । उसको व्यक्त करते हैं, इससे उस समय बंदियों के ऊपर किए जा रहे अत्याचारों, क्रूरताओं का यथार्थ एवं सजीव रूप में हमारे सभ्य उपस्थित होता है। शिवपूजन सहाय के संस्मरण 'ये दिन वे लोग' (1965 ई०) संकलित है। व्यंग्य-विनोद से पुष्ट मुहावरेदार भाषा में लिखित संस्मरणात्मक रेखाचित्र में चित्रोपता का गुण कूट-कूट कर भरा है। विष्णु प्रभाकर के कुछ शब्द: कुछ रेखाएँ (1965 ई०) में सामाजिक स्थितियों तथा उनके मूल में छिपी विसंगतियों को सटीक विश्लेषण किया हैं। उपेंद्रनाथ 'अश्क' के संस्मरण 'मंटो मेरा दुश्मन' (1956 ई०) में चुटीले व्यंग्य, कथात्मक शैली के प्रयोग द्वारा अपनी रचनाओं को सदैव प्रवहपूर्ण बनाये रखे हैं। महादेवी वर्मा के हिंदी संस्मरण साहित्य में सर्वोच्च स्थान हैं। उनके गद्य को संस्मरण साहित्य हिंदी में बेजोड़ माना जाता है। इनका संस्मरण संग्रह में 'पथ के साथी' (1956

ई०) तथा 'मेरा परिवार' (1972 ई०) हैं। इन संस्मरणों के करूण परिस्थितियों में विवश यातना भोगते पात्रों का मार्मिक उद्धाटन हैं। 'पथ के साथी' में 7 लेखकों की स्मृतियों को सजीव किया गया है। 'मेरा परिवार' में अमानवीय पात्रों की स्मृतियों का अवलोकन है, इसमें पशु-पक्षियों के साथ बीते हुए अपने समय की यथार्थता का वर्णन हुआ हैं। महादेवी जी के संस्मरणों में सरसता, रोचकता, व्यंग्यात्मकता, उक्ति, वैचित्र्य, आलंकारिता आदि का गुण विद्यमान है।

**पूर्व कृत शोध**

→ आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के संस्मरण साहित्य का समीक्षात्मक विश्लेषण– ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा (2012 ई०)

'रामवृक्ष बेनीपुरी और रामधारी सिंह दिनकर' के संस्मरण साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन- ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा (2018 ई०)

'हिंदी संस्मरण साहित्य में मानवेतर पात्रों की संवेदना-भूमि- अवधेशप्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (मध्यप्रदेश)

'हिंदी का संस्मरण साहित्य: स्वरूप, विकास एवं शिल्प- लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ (2021 ई०)

'बिहार का संस्मरण साहित्य: डॉ. आशा कुमारी विश्वविद्यालय प्रकाशन संस्करण- (1988 ई०)

'छायावादोत्तर हिंदी संस्मरण साहित्य एक समीक्षात्मक अनुशीलन-लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

**प्रस्तावित शोध का आधार ग्रंथ–सूची**

1) 'संस्मरण'– श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, (1952 ई०)

2) 'हमारे अध्याय'– श्री बनारसीदास चर्तुवेदी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, (1952 ई०)

3) ‘जिन्दगी मुस्काई’– कन्हैयालाल मिश्र ‘प्रभाकर’ भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन काशी, (1953 ई०)

4) ‘जंजीरे और दीवारे’– रामवृक्ष बेनीपुरी, राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशक, नई दिल्ली, (1957 ई०)

5) ‘माटी की मूरतें’– रामवृक्ष बेनीपुरी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, (2018 ई०)

6) ‘ये और वे’– जैनेंद्र कुमार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, (2018 ई०)

7) ‘पथ के साथी’– महादेवी वर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद (1956 ई०)

8) ‘मेरा परिवार’– महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, (1972 ई०)

9) ‘मण्टो मेरा दुश्मन’– उपेन्द्रनाथ अश्क, नीलाभ प्रकाशक, इलाहाबाद, (1956 ई०)

10) ‘ज्यादा अपनी कम परायी’– उपेन्द्रनाथ अश्क, नीलाभ प्रकाशक, इलाहाबाद, (1959 ई०)

11) ‘ये दिन वे लोग’– शिवपूजन सहाय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, (2019 ई०)

12) ‘कुछ शब्द: कुछ रेखाएँ’– विष्णु प्रभाकर सत्साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, (1954 ई०)

13) ‘लोक देव नेहरू’– रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, (1965 ई०)

14) ‘स्मरण और श्रद्धांजलियों’– रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, (1969 ई०)

15) ‘मेरे हमदम मेरे दोस्त’– कमलेश्वर राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, (1975 ई०)

16) ‘चंद संतरे और अनीता’– राकेश, राधाकृष्ण प्रकाशन, (1975 ई०)

17) ‘जिनके साथ जिया’– अमृतलाल नागर, लोक भारती प्रकाशन, (2018 ई०) द्वितीय संस्करण

18) ‘गाँधी: स्मरण और विचार’– काका कालेकर

19) ‘नये पुराने झरोखे’– हरिवंश राय बच्चन

20) ‘वन तुलसी की गंध’– फणीश्वरनाथ रेणु

21) ‘बचपन की स्मृतियाँ’– राहुल सांकृत्यायत- 1955 ई०

22) ‘जिनका मैं कृतज्ञ’– राहुल सांकृत्यायन, 1957 ई०

**प्रस्तावित शोध को परिकल्पना**

→ प्रस्तावित शोध प्रारूप के संबंध में मेरी परिकल्पना यह है कि 20 वीं शताब्दी के कथेतर गद्य जीवन की संवेदनशील धरातल का सूक्ष्म पर्यवेक्षण करने के लिए क्षमता विद्यमान है। खासकर संस्मरण विद्या की सजीवता और जीवतंता साहित्य को न केवल संवेदना करता है, बल्कि चिन्तन के नये क्षितिज का उद्घाटन भी करता है। ऐसे में प्रस्तावित शोध "स्वातंत्र्योतर हिंदी संस्मरण साहित्य का संवेदना एवम् शिल्प" के सम्भावित निष्कर्ष को न केवल साहित्य के क्षितिज क्षेत्र में विस्तार संभव है। बल्कि सन्निहित स्मृतियों से अनुभवजन्य लोग परिचित हो सकें।

**प्रस्तावित शोध की प्रविधि**

प्रस्तावित शोध विषय की मूल्य प्रविधि विवरणात्मक होगी। शोध विषय के सम्यक् निरूपण हेतु आगमन-निगमन विधियों का उपयोग संभव है। आगमन विधि से तथ्यों का संकलन और प्रमाणीकरण की प्रक्रिया पूरी होगी जबकि, निगमन विधि के द्वारा शोध के संभावित निष्कर्ष तार्किक विश्लेषण संभव है। प्रस्तावित शोध-विषय निम्नलिखित अध्यायों में विभाचित होगी–

1) प्रथम अध्याय : हिंदी संस्मरण साहित्य की अवधारणा और विकास
2) द्वितीय अध्याय : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी संस्मरण और संस्मरकर्ता का संक्षिप्त परिचय
3) तृतीय अध्याय : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी संस्मरण में मूल्य बोध और संवेदना
4) चतुर्थ अध्याय : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी संस्मरण में काव्य का नया धरातल
5) पंचम अध्याय : स्वातंत्र्योत्तर संस्मरण साहित्य भाषा और शिल्प
6) षष्ठ अध्याय : उपसंहार– निष्कर्ष और मौलिक मान्यताएँ

परिशिष्ट– संदर्भ ग्रंथ की सूची
पत्र-पत्रिकाओं की सूची

**आधार–ग्रंथ–सूची :**


1) ‘संस्मरण’– श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन काशी, (1952 ई०)

2) ‘हमारे अध्याय’– श्री बनारसीदास चर्तुवेदी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, (1952 ई०)

3) ‘जिन्दगी मुस्काई,– कन्हैयालाल मिश्र ‘प्रभाकर’ भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, (1953 ई०)

4) ‘जंजीरे और दीवारे’– रामवृक्ष बेनीपुरी, राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशक, नई दिल्ली,

5) ‘माटी की मूरतें’– रामवृक्ष बेनीपुरी प्रभात प्रकाशन, (2018 ई०)

6) ‘ये और वे’– जैनेंद्र प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, (2018 ई०)

7) ‘पथ के साथी’– महादेवी वर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद (1956 ई०)

8) ‘मेरा परिवार’– महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, (1972 ई०)

9) ‘मण्टो मेरा दुश्मन’– उपेन्द्रनाथ अश्क नीलाभ प्रकाशक, इलाहाबाद, (1956 ई०)

10) ‘ज्यादा अपनी कम परायी’– उपेन्द्रनाथ अश्क, नीलाभ प्रकाशक इलाहाबाद, (1959 ई०)

11) ‘ये दिन वे लोग’– शिवपूजन सहाय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, (2019 ई०)

12) ‘कुछ शब्द: कुछ रेखाएँ’– विष्णु प्रभाकर, सत्साहित्य प्रकाशन नई दिल्ली,

13) ‘लोक देव नेहरू’– रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन,

14) ‘स्मरण और श्रद्धांजलियों’– रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, (1969 ई०)

15) ‘मेरे हमदम मेरे दोस्त’ कमलेश्वर, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, (1975 ई०)

16) ‘चंद संतरे और’ अनीता राकेश, राधाकृष्ण प्रकाशन

17) ‘जिनके साथ जिया’ अमृतलाल नागर

18) ‘गाँधी: स्मरण और विचार’– काका कालेकर

19) ‘नये पुराने झरोखे’– हरिवंश राय बच्चन

20) ‘वन तुलसी की गंध’– फणीश्वरनाथ रेणु

21) ‘बचपन की स्मृतियाँ’– राहुल सांकृत्यायन, (1955 ई०)

22) ‘जिनका मैं कृतज्ञ’– राहुल सांकृत्यायन, (1957 ई०)

1) संस्मरण साहित्य विधा : शास्त्र और इतिहास, डॉ० बापूराव देसाई, पराग प्रकाशन, संस्करण- 2018 ई०

2) बिहार का संस्मरण साहित्य : डॉ० आशा कुमारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, संस्करण- 1988 ई०

3) हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण- 2018 ई०

4) हिंदी साहित्य का इतिहास : डॉ० नगेंद्र व डॉ० हरदयाल (संपादक) मयूर किताब प्रकाशत, संस्मरण 2018 ई०

5) हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचन्द्र शुक्ल, प्रभात प्रकाशत, संस्करण- 2017 ई०

6) संस्मरण तथा संस्मरणकार : डॉ० मानोरमा शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, संस्करण- 2017 ई०

7) हिंदी का गद्य-साहित्य : डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशक, वराणसी, बारहवें संस्करण 2018 ई०

8) साहित्यिक विधाएँ : पुनर्विचार- डॉ० हरिमोहन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016 ई०

9) हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण– 2017 ई०

11) मूरते माटी और सोने की, नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, संस्करण–2017 ई०

12) गद्य की पहचान : अरूण प्रकाश, अंतिका प्रकाशन संस्करण– 2012 ई०

13) हिंदी का संस्मरण साहित्य : डॉ० कामेश्वरशरण सहाय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, संस्करण, 1982 ई०

14) संस्मरण और रेखाचित्र : उर्मिला मोदी (सं०) अनुराग प्रकाशन– संस्करण– 2019 ई०

♦♦♦